Prabhat Khabar (14/10/2019)

रविवार को दुबारा खुली बंद पड़ी बिहारी डायसपोरा गैलरी

गिरिमिटिया मजदूरों के संघर्ष को देखना है तो पहुंचें बिहार म्यूजियम

कुछ ऐसी थी वेशभूषा.

बिहार म्यूजियम की चर्चित गैलरी बिहारी डायसपोरा एक बार फिर खुल गयी है. नयी सुविधाओं के साथ इसे दर्शकों के लिए रविवार को खोल दिया गया. गैलरी में चल रहे निर्माण कार्यों के कारण इसे करीब ढाई से तीन माह पूर्व बंद कर दिया गया था. इसके खुलने के साथ ही यहां दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ी. बिहार के इतिहास, लोक कला और संस्कृति को यहां देखा जा सकता है. इस गैलरी की सबसे बड़ी खासियत यहां लगी गिरमिटिया मजूदरों की कहानी बताती फोटो प्रदर्शनी है. इसमें बिहार से मॉरीशस, फिजी, ब्रिटिश गुयाना आदि देशों में गये गिरमिटिया मजदूरों के संघर्षों को देखा जा सकता है. यहां उनके दुर्लभ फोटोग्राफ्स और दस्तावेज लगाये गये हैं. अब यहां बिहार की पहचान के प्रतीक बरगद के पेड़ समेत कई अन्य चीजों को भी देखा जा सकता है. अगले कुछ दिनों में तीन एलइडी टीवी लगायी जायेंगे जहां बिहारी डायसपोरा से संबंधित वीडियो दिखाये जायेंगे.

गैलरी में अब बिहार की पहचान बरगद का पेड़ भी दिखेगा.

कौन थे गिरमिटिया मजदूर

कहते हैं कि बिहारियों के खून में कठोर मेहनत करने का जज्बा और मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बना लेने का हुनर है. सदियों पहले जब इस बात को अंग्रेजों ने समझा तो उन्होंने बिहारियों के परिश्रम का लाभ उठाने के लिए एक गहरी चाल चली. उन्हें बंधुआ मजदूर चाहिए था जो फिजी, ब्रिटिश गुयाना, मॉरीशस आदि में जाकर उनके लिए गन्ने की खेती कर सके. दुनिया से इंसान को गुलाम बनाने की प्रथा कुछ समय पहले ही खत्म हुई थी सो उन्होंने गुलामी का नया रूप तलाशा. वह एग्रीमेंट कर उन जगहों पर बिहार और आस - पास से मजदूर भेजने लगे. कहने को तो यह एग्रीमेंट था लेकिन सच्चाई थी कि यह भी गुलामी का दस्तावेज था. इस एग्रीमेंट को कम पढ़े - लिखे लोगों ने गिरमिट कहा और ऐसे मजदूर गिरमिटिया मजदूर कहलाने लगे.

नयी पीढ़ी ने पायी शिक्षा

गिरमिटिया या एग्रीमेंट वाले मजदूरों और उनके बच्चों ने बहुत कम शिक्षा पायी थी. वे सिर्फ आधिकारिक दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करना सीखने की इच्छा रखते थे. लेकिन दूसरी पीढ़ी को यूरोपीय स्कूलों में पढ़ने का अवसर मिला. 1936 में फिजी में अनेकों स्टूडेंट्स ने प्राइमरी स्कूल की शिक्षा पूरी की. इन्हें औपनिवेशिक दफ्तरों में छोटी नौकरियों के लिए प्रशिक्षित किया गया था. बीसवीं सदी के अंत तक बिहार के प्रवासी सुशिक्षित हो चुके थे.

बिहार से गये थे 10 लाख मजदूर

जहाजों में भर कर हजारों गिरमिटिया मजदूर बिहार से दूर देशों में पहुंचने लगे. उनकी यह यात्रा अंतहीन दुखों और कष्टों से भरी थी. 1834 से 1918 के बीच ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा दस लाख से अधिक भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को 19 विभिन्न उपनिवेशों के बागानों में भेजा गया. इन्हें कुली भी कहा जाता था जो कि एक नस्लवादी अपशब्द है. तमाम दुखों के बावजूद इन बिहारियों ने खुद को परिस्थितियों के अनुकूल ढाला. नतीजा यह रहा है कि उन गिरमिटिया मजदूरों के वंशज बाद में उन देशों में प्रधानमंत्री तक बनते हैं और आज वे सभी खुशहाल जीवन जी रहे हैं.

गिरमिटिया के कारण बना चटनी संगीत

यहां आपको जानकारी मिलती है कि किस तरह से चटनी संगीत का जन्म हुआ. यहां बताया गया है कि बागानों में बिहारी लोक और एफ्रो - कैरीबियाई संगीत परंपराओं के मेल से अनोखी संगीत शैली का जन्म हुआ, जिसे चटनी संगीत कहा जाता है. इस समसामयिक संगीत शैली में शादी - विवाह के परंपरागत भोजपुरी गीत और कैरेबियाई - अंग्रेजी शब्द, अफ्रीका - कैरिबियाई धुनों पर प्रस्तुत किया जाता है.

गैलरी में लगी जानकारी को पढ़ते दर्शक.

लोगों ने कहा, गिरमिटिया के बारे में यहां मिली जानकारी, बिहार को करीब से समझा

बिहार के लोगों ने विदेशों में जाकर अपनी पहचान कितनी मेहनत से बनायी यह देख कर अच्छा लगा.

देवेंद्र

गैलरी को देखा काफी पसंद आयी, कई नयी बातें जानने-समझने को मिली, बिहार म्यूजियम अच्छा लगा.

हिमानी

गिरमिटिया मजूदरों के संघर्षों की नयी जानकारी यहां मुझे मिली. बिहार के लोग काफी मेहनती होते हैं.

अदिति

गैलरी काफी आकर्षक है, रोचक तरीके से बिहारी प्रवासियों की जानकारी दी गयी है यह सब देख अच्छा लगा.

संजय कुमार

बिहार के लोग दूसरी जगहों पर जाकर काफी अच्छा काम करते हैं, यह बात इस गैलरी को देख कर साबित हो जाती है.

विभा

Prabhat Khabar (14/10/2019)

मिसेज इंडिया वर्ल्ड वाइड के फाइनल में सारण की शिवा

एकमा (सारण). हंसराजपुर के टोला गोपाली निवासी व अपर निरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए रामाशंकर यादव की विवाहिता पुत्री शिवा कुमारी मिसेज इंडिया वर्ल्ड वाइड चैंपियनशिप 2019 के ग्रैंड फिनाले में पहुंच गयी हैं. ग्रैंड फिनाले इसी अक्तूबर यूरोप के ग्रीस में होगा. शिवा की इस कामयाबी को लेकर उसके मायके गोपाली में भी काफी खुशी का माहौल नजर आ रहा है. शिवा के पिता रामाशंकर यादव, चाचा उमाशंकर यादव व हरिशंकर यादव ने बताया कि यह इस चैंपियनशिप का नौवां सीजन है. बताते चलें कि शिवा के पिता पुलिस अवर निरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं. शिवा ने जमशेदपुर के वीमेंस कॉलेज बिष्टुपुर से स्नातक और एमबीए की पढ़ाई की है. बताया गया

है कि इसी अक्तूबर में ग्रीस में मिसेज इंडिया प्रतियोगिता का आयोजन होगा. इस मिसेज इंडिया वर्ल्ड वाइड चैंपियनशिप में शिवा कुमारी यादव भी शामिल होंगी. वह विभिन्न चरणों की प्रतियोगिता में धाक जमाने के बाद इस फाइनल तक पहुंची हैं. इसी साल फरवरी में मुंबई व आगरा में हुए ऑडिशन में वह फाइनल के लिए चयनित हुई है.

Prabhat Khabar (14/10/2019)

अब उमंग एप से जाति-आय समेत अन्य प्रमाणपत्र भी बनवा सकेंगे

इस एप पर राज्य सरकार की चलने वाली योजनाओं को भी जल्द जोड़ा जायेगा

संवाददाता ▶ पटना

केंद्र सरकार ने दो साल पहले 2017 में अपनी तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए उमंग एप को लांच किया था. अब इस एप पर राज्य सरकार की योजनाओं को भी जोड़ा जायेगा ताकि आम लोग इस एप का भी उपयोग करके राज्य और केंद्र दोनों की योजनाओं का लाभ ले सकें. शुरुआती स्तर पर राज्य सरकार की कुछ वैसी चुनिंदा योजनाओं को इससे जोड़ा जा रहा है, जो ज्यादा लोकप्रिय हैं और इनकी उपयोगिता भी ज्यादा है.

इसके लिए विभागीय स्तर पर कवायद तेज हो गयी है और केंद्रीय आइटी मंत्रालय से समन्वय भी स्थापित किया गया है. अब जल्द ही महत्वपूर्ण योजनाओं को इससे जोड़ दिया जायेगा. आने वाले दिनों में इसकी मदद से जाति, आय व आवासीय समेत अन्य सभी प्रमाणपत्र बनाने के लिए आवेदन करने के अलावा ऐसी अन्य सभी जरूरी योजनाएं इस पर मौजूद होंगी. इस एप की मदद से इन योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं. हाल में केंद्र सरकार ने इस एप पर कर्मचारी भविष्य निधि या पीएफ, जीपीएफ को भी जोड़ दिया है. इससे कोई भी कर्मचारी अपने खाते की अपडेट स्थिति, बैलेंस व निकासी समेत अन्य तमाम जानकारी एकत्र कर सकते हैं.इस उमंग एप के माध्यम से कई योजनाओं या सुविधाओं का लाभ उठाया जा सकता है. गैस कनेक्शन का नंबर लगाने से लेकर अन्य सभी रोजमर्रा की जरूरत के काम भी किये जा सकते हैं.

अब राज्य की पेंशन योजना, प्रमाणपत्र के लिए आवेदन व कई तरह की सब्सिडी समेत अन्य तमाम योजनाओं का लाभ भी उठाया जा सकता है. राज्य की योजनाएं भी एक स्थान पर मिलेंगी, जिसे लोग अपनी जरूरत के मुताबिक उपयोग कर सकते हैं.

Prabhat Khabar (14/10/2019)

पहल ● **पीएम पैकेज में शामिल हैं राज्य के ये नेशनल हाइवे**

आठ एनएच की डीपीआर को मिलेगी मंजूरी

➲ **अगले दस दिनों में होगा फैसला**

संवाददाता ▷ पटना

अगले 10 दिनों में पीएम पैकेज में शामिल राज्य के आठ एनएच के डीपीआर को नेशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआइ) की तरफ से मंजूरी मिल जायेगी. इसे लेकर एनएचएआइ के महानिदेशक ने सभी आठ एनएच की रिपोर्ट मांगी है. इस बारे में एनएचएआइ और पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों और इंजीनियरों के बीच पटना स्थित एनएचएआइ के कार्यालय में बैठक हुई. इसमें सभी सड़कों की स्थिति के बारे में चर्चा हुई. सूत्रों का कहना है कि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने सभी आठ सड़कों को इस साल फरवरी महीने में एनएच घोषित किया था. इनमें पुराना एनएच 103 शामिल था. इसका विस्तार किया गया है, इसका नया नाम एनएच 322 होगा. सभी सड़कों के डीपीआर पर काम हो रहा था. इसकी मंजूरी मिलने के बाद टेंडर प्रक्रिया कर सड़क बनाने की शुरुआत होगी.

इन सड़कों की डीपीआर को मिलेगी मंजूरी

- **60 किमी** की लंबाई में एनएच 103 पुराना, नया एनएच 322- हाजीपुर में पासवान चौक (एनएच 19) से जन्दाहा-मुसरीघरारी (एनएच-28)-समस्तीपुर-दरभंगा-एनएच 27 तक.
- **54.96 किमी** लंबाई में एनएच 122बी, हाजीपुर (एनएच 22) से बछवाड़ा में एनएच 122 की शुरुआत तक वाया महनार और मोहिनुद्दीननगर.
- **14.31 किमी** की लंबाई में एनएच 131बी, नवगछिया से भागलपुर.
- **59.60 किमी** की लंबाई में एनएच 133 इ, भागलपुर (एनएच 33) से ढाका मोड़ से हंसडीहा (झारखंड).
- **69.02 किमी** की लंबाई में एनएच 319ए, बक्सर (एनएच 84) से चौसा-रामगढ़-मोहनिया (एनएच 19).
- **10.63 किमी** की लंबाई में एनएच 327एडी, सरायगढ़ (एनएच 327ए) से लालगंज-गोपालगंज (एनएच 106).
- **16 किमी** की लंबाई में एनएच 333सी, जमुई से खरगडीहा-चातरो-सरवण चकाई रोड.
- **46.45 किमी** की लंबाई में एनएच 527ई, रोसड़ा से दरभंगा (एनएच 27) तक.

Prabhat Khabar (14/10/2019)

पहल ● मछलीपालन व ऑर्गेनिक खेती में युवाओं के लिए अपार संभावनाएं

बेहतर मार्केटिंग से लाभकारी होगी ऑर्गेनिक खेती

प्रतिनिधि ▷ बिहटा

किसान विज्ञान आरा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक पीके द्विवेदी ने कहा है कि ऑर्गेनिक उत्पादों की डिमांड की कोई सीमा नहीं है. किसान बेहतर मार्केटिंग के जरिये ऑर्गेनिक खेती को लाभकारी बना सकते हैं. श्री द्विवेदी रविवार को सिकंदरपुर में किसानों की एक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे. संगोष्ठी में राज्य के पूर्व पुलिस महानिदेशक एसके भारद्वाज सहित कई किसान व कृषि विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया. संगोष्ठी का उद्देश्य रासायनिक उर्वरक से हो रहे स्वास्थ्य के नुकसान व खेती से युवाओं के होते मोहभंग पर प्रकाश डालना था. कृषि वैज्ञानिक श्री द्विवेदी ने कहा कि लोग अपने परिवार को अच्छी चीज खिलाना चाहते हैं. रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से उपजाये गये फल, सब्जी व अनाज के परिणाम अब सामने आने लगे हैं. शहर को छोड़िए, अब गांव में भी ऐसा कोई घर नहीं जिसमें परिवार का कोई सदस्य बीमार न हो. कई लोग तो गंभीर बीमारियों के शिकार हो चुके हैं. रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध इस्तेमाल ने हमारे स्वास्थ्य के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ कर दिया. जिसकी भरपाई बगैर ऑर्गेनिक खेती के अब संभव नहीं.

किसान संगोष्ठी में मौजूद अतिथि.

शहर से लेकर गांव तक है ऑर्गेनिक उत्पाद की मांग

गांव से लेकर शहर तक ऑर्गेनिक पदार्थों का डिमांड बढ़ता जा रहा है. किसानों को सिर्फ इसकी मार्केटिंग का तरीका बदलना होगा. ग्राहकों के सहूलियत के मद्देनजर अपने उत्पादों को सही स्थानों तक डिलिवरी करना होगा. पूर्व पुलिस महानिदेशक एसके भारद्वाज ने युवाओं से ऑर्गेनिक खेती करने में आगे आने की अपील की. इस अवसर पर पैनाल पंचायत की सरपंच बबीता कुमारी, संगीता कुमारी, गिरेंद्र नारायण गिरी, प्रितेश कुमार, रवि भूषण, बिरेंद्र सिंह सहित कई किसान मौजूद थे.

Hindustan (14/10/2019)

वैज्ञानिकों ने खोज ली बेहतर स्वाद वाली नई किस्म, उत्पादकता होगी दोगुनी से ज्यादा

बिहार में अब सालों भर हो सकेगी बैंगन की खेती

पटना | हिन्दुस्तान ब्यूरो

बिहार में बैंगन की खेती अब सालों भर होगी। स्वाद तो नहीं बदलेगा, साथ में उत्पादन भी दूना ज्यादा होगा। बिहार कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने बैंगन की ऐसी नई किस्म इजाद कर ली है। जाड़े के साथ अब इसकी खेती गर्मी में भी होगी। आश्चर्य यह है कि 42 डिग्री तापामन तक इसके पौधों में फल लगेंगे। नई किस्म का नाम भी रखा गया है 'सदाबहार'।

वैज्ञानिकों की यह नई खोज सब्जी उत्पादन में बिहार को देश में अव्वल बनाने के सरकारी प्रयास में सहायक होगी। वर्तमान में बिहार सब्जी उत्पादन में देश में तीसरे नंबर पर है। देश की कुल खपत का लगभग नौ प्रतिशत सब्जी का उत्पादन बिहार में होता है। वैज्ञानिकों के नए शोध वाला बैंगन का रंग हरा है। इसके फल हरे रंग की धारियों वाले होते हैं। एक बैंगन का औसत वजन 85-88 ग्राम है। इसके एक पौधे में 23-26 फल लगते हैं। कुल उत्पादन के मामले में यह वर्तमान में प्रचलित किस्मों से काफी अधिक होगा। गर्मी के मौसम में इसका उत्पादन तो थोड़ा कम यानि 270 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होगा। बावजूद यह वर्तमान की उत्पादकता 197 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से अधिक होगा। लेकिन जाड़े के मौसम में उसकी उत्पादकता दूने से भी अधिक यानी 440-480 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होगी।

गुणवत्ता में बेहतर

वैज्ञानिकों ने बताया कि नई किस्म के पौधे क्षेत्र की हर परिस्थिति को सहने में सक्षम हैं। इस किस्म में बीज बहुत कम हैं। स्वाद भी बेहतर है। साथ ही उत्कृष्ट गुणवत्ता वाला है। इस किस्म की कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 2.30 डिग्री ब्रिक्स है। चीनी की मात्रा बहुत कम लगभग 2.56 प्रतिशत ही है। साथ ही यह एंटीऑक्सिडेंट में समृद्ध है, जिससे शरीर को अतिक्ति विटामिन मिलेगा।

कितनी खेती

- 57.88 हेक्टेयर में होती है खेती राज्य में
- 1144 टन होता है उत्पादन
- 197 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है उत्पादकता
- 440 क्विंटल प्रति हेक्टेयर नई किस्म की उत्पादकता